मिथिलांचल कोशी क्षेत्र में गाये जाने वाले लोकगीतों में विवाह संबंधी संस्कार गीत :– एक अध्ययन

चन्द्रकिरण रीना,
शोधार्थी,
पी0एच0डी0
संगीत विभाग, पटना युनिवर्सिटी

प्रो. (डा.) नीरा चौधरी
संगीत विभाग, मगध महाद्यिालय, पटना

परिचय

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास की कड़ी में बिहार राज्य का स्थान महत्वपूर्ण रहा है, बल्कि ये कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी की बिहार का इतिहास ही वस्तुतः भारत का इतिहास रहा है। जिस प्रकार बिहार के इतिहास को जाने बिना भारत के इतिहास का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता उसी प्रकार मिथिलांचल कोशी क्षेत्र के इतिहास को जाने बगैर बिहार के इतिहास का यथार्थ ज्ञान भी अधुरा ही रहेगा। मिथिलांचल कोशी क्षेत्र की सभ्यता संस्कृति प्रमुखता से देश–देशान्तर में ख्याति प्राप्त की है। चाहे धर्म, दर्शन, साहित्य, ज्ञान विज्ञान हो या कला–संस्कृति प्रत्येक क्षेत्र में इस धरती को गौरव प्राप्त है। बाल्मीकि–रामायण के बाल–काण्ड में मिथिला की चर्चा इस प्रकार की गई है–

रामोडिपं परमां पूजां गौतमस्य महात्मनः

सकाषाद् विधिवद् प्राप्य जगाम मिथिलां ततः

मिथिला की पवित्र पावन भूमि प्राचीनकाल से ही चिन्तन मनन की भूमि रही है। प्रत्येक क्षेत्र विशेष की अपनी कुछ विशेषताएं होती है। वहाँ की जलवायु, वातावरण, आचार–विचार, रहन–सहन इत्यादि का प्रभाव संस्कृति पर भी पड़ता ही है। मिथिलांचल कोशी क्षेत्र की भी अपनी संस्कृति है और संस्कृति में अपनी विशिष्टता है। भारतीय संस्कृति की जो विशेषताएँ हैं उनकी झलक हमें लोकगीतों के माध्यम से बखुबी जानने और देखने को मिलती है। प्रत्येक क्षेत्र विशेष की लोक संस्कृति हमें वहां के लोक साहित्य, लोकगीत, लोकनाट्य इत्यादि के माध्यम से जानने को मिलती है।

कोशी क्षेत्र का लोकगीत :– कोशी क्षेत्र की जो संगीत परम्परा है, उसमें लोकगीतों का अहम स्थान है, क्योंकि इसके माध्यम से हमें इस क्षेत्र की भाषा, रहन–सहन, लोक परम्परा, को भली भाँती जान और समझ पाते हैं। इस क्षेत्र की सम्पूर्ण सास्कृतिक चेतना का सुस्पष्ट और सजीव चित्रण लोकगीतों में सहज दृष्टिगोचर होता है। कोशी क्षेत्र की अपनी विशिष्ट संस्कृति है जिसकी आत्मा भारतीय संस्कृति पर आधारित है। लोकगीतों का निवास स्थान लोक कंठ है। इसमें कृत्रिमता नाम मात्र भी नहीं होती। इसलिए अगर किसी देश या प्रांत का यथार्थ परिचय जानना हो तो वहाँ के लोकगीतों को सुनना और समझना चाहिए। इसके अध्ययन के बिना किसी भी देश की सभ्यता–संस्कृति, धर्म–नीति, रीति–रिवाज, कला–साहित्य, सामाजिक, अभ्युदय तथा अकांक्षाओं का सूक्ष्म अवलोकन नहीं हो सकता। लोकगीत मानव की सम्पूर्ण विकास यात्रा को जानने का बोध है। यह एक धारा है, एक अविच्छिन्न प्रवाह है, घात–प्रतिघात से जन्मी विकास यात्रा है। एक निरन्तरता का परिवर्तन भरा रूपान्तरण है।

मिथिलांचल कोशी क्षेत्र के प्रत्येक पर्व–त्योहार, उत्सव एवं संस्कारगत कार्य में संस्कार गीत इस प्रकार घुला हुआ है कि आधुनिकता के इस दौर का भी कोई खास प्रभाव दृष्टिगोचर नही होता। जन्म, मुण्डन, उपनयन, विवाह संबंधी जितने भी संस्कार होते हैं उसके अवसर पर भले ही वेशभूषा में परिवर्तन आ गया है, पूर्व की अपेक्षा परिवेश में बदलाव आ चुका है, लेकिन इन सब के बावजूद भी सभी संस्कार गीत वही गाये जाते हैं, जो परम्परागत रूप से चलते आ रहे हैं।

मिथिलांचल कोशी क्षेत्र में प्रत्येक जाति या समुदाय जीवन के सभी संस्कारों को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। मृत्यु संस्कार में समदाउन या निर्गुण गाने की प्रथा रही है जिसे स्थानीय समाज के खास करके पुरूष वर्ग के लोग गाते हैं साथ में लोक वाद्यों का वादन भी होता है जैसे – ठोलक, झाल, मजीरा इत्यादि। कोशी क्षेत्र में जितने भी संस्कार गीत गाये जाते हैं (मृत्युगत संस्कार को छोड़कर) ज्यादातर महिलाओं के कंठ से ही निःसृत होते हैं। इन लोकगीतों में अलग–अलग धुने पायी जाती है जो इन गीतों को और भी विशिष्टता प्रदान करती है। सामान्यतः इन संस्कार गीतों के सभी शब्द, शैली, धुन और प्रस्तुतिकरण का तरीका एक ही है फिर भी स्थान, जाति और सम्प्रदाय की कुछ अलग पहचान होती है जिसके कारण इन गीतों में विविधता पाई जाती है। जो गीत पूर्णिया जिला में प्रचलित है वही गीत दरभंगा, सुपौल और सहरसा जिला में भी प्रचलित है। भिन्नता बस इतना है कि उस गीत में प्रयुक्त शब्द, स्थान और व्यवहार के कारण भिन्न हो जाते हैं। इन लोकगीतों, संस्कार गीतों के माध्यम से हमें मिथिलांचल कोशी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक रीति–रिवाजों की झांकी देखने को मिलती है।

हिन्दुओं के धर्मशास्त्रों के अनुसार सोलह संस्कारों को मानने की प्रथा चलती आ रही है जिसमें से कुछ संस्कारों का लोप हो चुका है तो कुछ संस्कारों का प्रचलन कम हो गया है। मुख्य रूप से वर्तमान में जन्म, मुंडन, उपनयन, विवाह संबंधी संस्कारों का प्रचलन आज भी है। संस्कारों का संबंध संस्कार गीत से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है

क्योंकि बिना गीत का संस्कारगत कार्य अधुरा ही माना जाएगा। कोशी क्षेत्र में प्रत्येक संस्कार पर स्वतंत्र रूप से गीत गाने की प्रथा है। विभिन्न संस्कारों से संबंधित कोशी क्षेत्रीय लोकगीतों में जन–रूचि, प्रवृत्ति, मान्यता, विश्वास एवं रीति–रिवाजों का परिचय मिलता है। यहाँ हम विवाह संबंधी संस्कार गीतों का वर्णन करने जा रहे हैं।

विवाह संस्कार :–विवाह हिन्दु धर्म का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व का महत्वपूर्ण संस्कार है। भारतवर्श में विवाह संस्कार का मुल स्त्रोत ऋगवेद को माना जाता है। भारतीय समाज में विवाह संस्कार को सामाजिक और धार्मिक महत्व दिया गया है। वैदिक युग में यज्ञ धर्म का अनिवार्य अंग था और कोई भी यज्ञ बिना पत्नी के पूर्ण नहीं होता था। इसलिए विवाह संस्कार से युक्त पुरूष ही पूर्ण माना जाता था। कोशी क्षेत्र में विवाह संस्कार संबंधी लोकगीतों में विवाह के अंतर्गत प्रचलित इन गीतों में वर पक्ष व कन्या पक्ष दोनों के यहाँ कई प्रकार के लोकगीत गाये जाते हैं जिसमें कुछ गीतों में समानता होती है, तो कुछ भिन्न होते हैं। विवाह संस्कार संबंधी कुछ मुख्य गीत हैं – कुमार गीत, लगन, गोसाई गीत, मटकोर, लावा भुंजाई, ओठंगर, आम–महुआ विवाह, परिछन, मड़वा, नहछू, चुमावन, कन्यादान, सिन्दुरदान, लावा छिटाई, डेहरी–छेकाई, कोहबर, पचीसी, कन्या निरीक्षण, खोईंछा–झडाई, हल्दी लगाई, मातृका–पूजा, वेदी घुमावन, गठबंधन इत्यादि। विवाह संबंधी लोकगीतों की लंबी श्रृखला है यहाँ मुख्य–मुख्य गीतों पर ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है।

कुमार गीत :– सर्वप्रथम कन्या के पिता द्वारा योग्य वर की तलाश की जाती है वैवाहिक प्रसंग में सीता–राम, गौरी–महादेव की जोड़ी को दामपत्य का आदर्श माना जाता है। इसलिए इन गीतों में कन्या पक्ष के लिए सीता और वर पक्ष के लिए राम शब्द संबोधित करने की परम्परा है। विवाह योग्य बेटी को देखकर पिता चिन्तित हो जाते हैं और हाथ में लाठी और सिर पर पगड़ी बाँध निकल परते हैं बेटी के लिए योग्य वर की तलाश में। बहुत ढुढने के बाद भी उन्हे अपनी सीता समान बेटी के लिए योग्य वर नहीं मिलता है और वे सोचने लगते हैं कि क्या उनकी बेटी कुवारी ही रह जाएगी। लेकिन चारो दिशाओं में खोजने के बाद उसे राम के समान वर मिल ही जाता है इस गीत में यही वर्णन किया गया है।

'सीता के सुरति देखि झखथि जनक रिखि,

आब सीता रहलि कुमार यो।।1।।

हाथ लेल लठिया बान्हल पगरिया,

चलि भेल मगहा मुंगेर यो।

सीता जुगुत बर कतहुँ न भेंटल,

आब सीता रहलि कुमारिं यो।।2।।

उतरहिं खोजल दखिनहिं खोजल,

खोजल अजोधा के राज यो।

राम लखन दुनु भईया भेटल,

आब सीता हैत कन्यादान यौ ।।3।।1

"वर का चुनाव हो जाने के बाद वर के हाथ में कुछ रूपया दे दिया जाता है जिसे 'वरीक्षा' कहते हैं। इसका तात्पर्य है कि कन्या के लिए वह वर आरक्षित हो गया।"2 वर को चुनने के सिलसिले में मैथिली में एक बड़ा मार्मिक लोकगीत प्रचलित है जिसमें एक बेटी अपने पिता से आशंकित होकर प्रश्न पुछती है:–

''बाबा यौ, कौन नगर जुआ खेली अयलों कि हमरा के हारि अयलों यौ।

बेटी हे अवध नगर जुआ खेली अयलौं कि तोहरा के हारि अयलहुँ हे।''3

तिलक गीत :– वर का चुनाव हो जाने के बाद वर के यहाँ तिलकोत्सव होता है जिसमे कन्या के पिता सहित अन्य सगे–संबंधी वर के लिए फल, वस्त्र, बर्तन, आभुषण, रूपया आदि लेकर आते हैं और इन सब चीजों को धार्मिक अनुष्ठान के अनुसार वर के हाथ पर रखते हैं। वर्तमान में तिलक प्रथा दहेज जैसी कुप्रथा के रूप में प्रचलन में है। जो समाज के लिए अभिशाप है। तिलक गीत का एक प्रकार प्रचलित है जो इस प्रकार है :–

''शुभ दिन आई तिलक घर आओल

केहन सुन्दर समय सुहाएल

रतन जड़ाऊ, चौकी मठाऊ

ओही चौकी पर बन्ना के बैसाओल

सार थारी हुनक कर थमाओल

मुख में हुनका बीड़ा खुआओल।''4

तिलक का रश्म पुरा हो जाने के बाद विवाह की तिथि से पहले हल्दी–धान भेजा जाता है। कन्या पक्ष के यहाँ मंडप निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। मंडप कच्चे हरे बाँसों का बनाया जाता है। जिसमें 5 से लेकर 11 बाँस तक लगाये जाते हैं। मंडप के बाहर मंडप के बाएँ भाग में वेदी बनायी जाती है जिसके नीचे सिन्दुरदान होती है।

मटकोर गीत :– मंडप पर रंग–बिरंगे कागजों का

लतड़न बनाकर उसे सजाया जाता है। इस समय मंडप गीत गाये जाते हैं। कन्या के घर माटी कोड़ाई की रश्म निभाई जाती है जिसमें सुहागन स्त्रियाँ एक साथ मिलकर माटी कोड़ने किसी कुआँ या तालाब के पास जाती है तो यह गीत गाती है :–

''कहवां के पीयर माटी, कहां के कुदार हे

कहवां के पाँच सोहागिन माटी कोरेजास हे''5

मिट्टी कोरने के बाद हल्दी चढ़ाने की विधि आती है। जिसमें कन्या को तेल और हल्दी लगाई जाती है। इस अवसर पर भी 'हल्दी चढ़ाई' गीत गायी जाती है। इसके बाद लावा भुजाई एवं मातृपूजन होता है। कन्यापक्ष में इतनी विधि सम्पन्न होने के बाद बारात आगमन की प्रतीक्षा होने लगती है।

उबटन गीत :– विवाह के पूर्व कन्या तथा दुल्हे को हल्दी, सरसों, जौ, तिल, चिरौंजी तथा अन्य सुगन्धित वस्तुओं के समिश्रण से उबटन बनाकर लगाया जाता है जिससे उसके रंग–रूप में निखार आता है। इस गीत मे उबटन लगाने से संबंधित बात का उल्लेख किया गया है :–

''कथि कटोर में आगर चानन, कथि कटोरा फुलेल अबटन लागी रही।

सोने कटोरा आगर चानन, रूप कटोरा फुलेल अबटन लागी रही।''6

कुलदेवी/गोसाई गीत :– सम्पूर्ण विवाह होने तक कुल देवी या गोसाउनी गीत का गायन भी होते रहता है। इन गीतों में भगवान शिव माता गौड़ी, गणेश, गोसाई आदि की आराधना की जाती है ताकि विवाह सम्पन्न होने तक कोई बाधा उत्पन्न न हो। कुछ गीत इस प्रकार है :–

'' मोरही जे अँगना में चनन केरा गाछ

वोही तर हे ठार भेले गहिल देवी

आगु भायक मैया जग कराबे हे

काए सैना आवै, लगहर

काए सैना आवै, पुरहर

काए बहिना आवे हे तु गहिल देवी

आगु भायक मइया जग कराबे हे ''7

परिछन :– जब बारात द्वार लगती है, तो वर को कन्या का भाई गोद में उठाकर आँगन में लाता है जहाँ पाँच सधवा महिलाएं तथा साथ ही कन्या की माता दीप जलाकर वर की आरती उतारती हैं तथा पान के पत्ता से दोनों गालों को सेंकती है साथ ही दही और अक्षत का टीका भी लगाती है, गोबर की पिठुरी आदि से वर का परिछन किया जाता है जिसका उल्लेख इस गीत में हुआ है :–

'' आगे माई माथ में मउरिया सोभे, हाथ में रूमाल हे ।।3।।

आगे माई गोबर पिठुरिया सासु देलखिन धुमाय हे।

आगे माई दही चउरा छिटी सासु, निरखे जमाय हे ।।4।।8

नहछू :– विवाह के समय नहछू करने की प्रथा है जिसमें वर–वधू की अंगुली से किंचित रक्त रूई में लेकर तथा बाद में उस रक्त को पान में मिलाकर एक दूसरे को खिलाने की परम्परा है। माना जाता है कि ऐसा करने से दोनों का दामपत्य जीवन सुखमय बीतता है। इस अवसर पर भी गीत गाने की प्रथा है जो इस प्रकार है :–

'' आबहु नौअनिया सोना क लहरनी, हाथ लेहु हे सोहाओन लागे।

सीता दाई क नहछू कर देहो, हे सोहवन लागे।।1।।9

भॉवर :– लड़की के भाई द्वारा दुल्हे की गर्दन में अंगोछा लपेटकर उसे मंडप के चारों ओर घुमाने की एक प्रथा है जिसे प्रस्तुत गीत के माध्यम से दिखाया गया है :–

'' बाबु धीरे–धीरे चलियों ससुर गलिया।

ससुर गलिया हे अवध गलिया।।1।।

तोहर मउरिया में लागल अनार कलिया।''10

सिन्दुरदान गीत :– विवाह में सर्वाधिक महत्व सिन्दुर दान का है। निम्नांकित विवाह गीत में इसी का वर्णन है :–

'' प्रिय पाहुन सिन्दुर दान करू, लग्न मुहूर्त सुमंगल एहिखन,

आब न विलम्ब महान करू, प्रिय पाहुन .....''11

चुमावन गीत :– इस विधि को सम्पन्न करने के लिए कच्चे बाँस के डाला में दूब, धान, हल्दी लेकर वर एवं कन्या को चुमाया जाता है तथा वर एवं कन्या को सभी बड़े बुजुर्ग, सधवा महिलाओं के द्वारा आशिर्वाद दिया जाता है। सधवा महिलाओं द्वारा चुमावन की विधि सम्पन्न करने और आशिर्वाद देने का उल्लेख प्रस्तुत गीत में हुआ है :–

'' चुमाबहु हो, ललना धीरे–धीरे, बजाबहु हो बजना धीरे–धीरे ।।1।।

अपना महल सॅ अम्मा जे निकलली, चुमाबहु हो ललना धीरे–धीरे।''12

विदाई गीत :– यह वह क्षण होता है जब कन्या पक्ष के यहाँ सभी की आँखे नम हो जाती है। विदाई गीत में इतनी करूणा होती है कि कोई भी वज्रहृदय भी इसे सुनकर द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता। इसी भावना की अभिव्यक्ति निम्नलिखित गीत में देखा जा सकता है :–

'' बड़ी रे जतन से हम सीया धिया के पोसलों,

सेहो रघुवंशी लेने जाय।

मिली लेहो मिली लेहो, सखिया सहेलिया सब,

सीता बेटी जाये ससुरार''13

कोशी क्षेत्रान्तर्गत मैथिली लोकगीतों में वर के रूप में सदा भगवान राम तथा कन्या के रूप में माँ सीता की कल्पना की गई है। इसलिए यहाँ हर कन्या सीता और हर वर राम है। इन गीतों के अलावे भी अनगीनत विवाह गीत है जिसकी चर्चा यहाँ नहीं की गई है जैसे – लावा छिटाई, ओठंगर, कमर खोलाई, हरीर पान खिलाई, साँखर–सँठाई, सिरहर–भराई, पाग–उतराई, कन्या –चिन्हाई, पचीसी खेलाई, देहरी छेकाई, कोहबर, खीर–खिलाई, कन्या–निरीक्षण, घुंघट, खोईछा–झड़ाई, चतुर्थी इत्यादि।

निष्कर्ष :– इस प्रकार बिहार के अन्य क्षेत्रों की तरह ही कोशी क्षेत्र में भी संस्कारों गीतों का प्रचलन प्रचुरता से रहा है। इसीतरह मिथिलांचल कोशी क्षेत्र का संस्कार गीत यहाँ कें स्थानीय लोगों में स्फूर्ति, आनंद उल्लास–उमंग भरने का कार्य करता है। इन गीतों से कोशी वासियों में शक्ति का संचार होता है जिससे ये उर्जा पाकर जीवन के तमाम संघर्षो को हंसते–खेलते पार कर जाते हैं। प्रायः कोशी क्षेत्र के सभी वर्ग समुदाय के लोग संस्कार गीत को अपने जीवन का एक मांगते हैं और इन गीतों के साथ इनका अन्योन्याश्रय संबंध है।

संदर्भ :

1. शर्मा, श्री राधाबल्लभ, '' मैथिली संस्कार गीत'' बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना, द्वितीय संस्करण 2011 पृष्ठ–101
2. बहरदार, डॉ छोटेलाल, '' लोकगीतों का समाज शास्त्रीय अध्ययन'', भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000, पृष्ठ – 79
3. तदैव, पृष्ठ – 85
4. राय, डॉ अमोल, '' लोक जीवन में संस्कार गीतक महत्व'' रीता प्रकाशन, मधेपुरा, जनवरी 2007, पृष्ठ – 71
5. सिंह, डॉ माधुरी, 2010, "बिहार के लोकगीतों के अन्तर्गत संस्कार गीत एक दृष्टी, भैरवी, (संगीत शोध पत्रिका),अंक : 2, पृश्ठ – 144
6. शोधार्थी द्वारा क्षेत्र भ्रमण कर सीता देवी, ग्राम – गम्हरिया, सहरसा से प्राप्त लोकगीत के पद
7. तदैव
8. शर्मा श्री राधाबल्लभ, '' मैथिली संस्कार गीत'' बिहार राष्ट्र भाषा परिशद्, पटना, द्वितीय संस्करण 2011 पृष्ठ–180
9. तदैव – 162
10. तदैव – 185
11. बहरदार, डॉ छोटेलाल, ''लोकगीतों का समाज शास्त्रीय अध्ययन'', भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ – 88
12. शोधार्थी द्वारा क्षेत्र भ्रमण कर सीता देवी, ग्राम – गम्हरिया, सहरसा से प्राप्त लोकगीत के पद
13. चौधरी, डॉ विनय कुमार, ''कोशी अंचल के लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'', संदर्भ प्रकाशन, मधेपुरा, वर्ष – 2010, पृश्ठ – 77